ISSN : 2583-2948

प्रेम दुविधा भरा नहीं होता

एड्मिरल खुर्रम नूर
नयी दिल्ली

जैसे जैसे मुलम्मे उतरते रहे,
लोग घुल मिल के आपस में खुलते रहे।
हमने वादे न पूरे किये हों तो क्या?
फिर भी वादे लगातार करते रहे।
हर अशर्फ़ी कसौटी पे परखी गई,
खोटे सिक्के यूँ ही जग में चलते रहे।
लोग जीवन में क्या, मौत के बाद भी,
कुछ क़दम चल के कंधा बदलते रहे।
वो तो ख़ुद थे सदा 'नूर' के ख़ौफ़ में,
हम अंधेरों से नाहक़ ही डरते रहे!

.....

प्रेम दुविधा भरा नहीं होता,
या तो होता है या नहीं होता।
आप से जो मिला नहीं होता,
ज़िन्दगी में मज़ा नहीं होता।
अपने दिल की सुनें या दुनिया की,
हम से ये फ़ैसला नहीं होता।
मसलेहत सीरतें बदलती है,
दिल से कोई बुरा नहीं होता।
किस में हिम्मत थी मुझ पे वार करे,
गर मिरा सर झुका नहीं होता।
दिल अगर दिल के पास पास रहे,
फ़ासला फ़ासला नहीं होता।
तेरी चाहत ने जो चढ़ाया है,
क़र्ज़ हमसे अदा नहीं होता।
झाँक लेता जो 'नूर' के दिल में,
तू कभी बेवफ़ा नहीं होता।